शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

शंकराचार्य का योगदान

आचार्य विनोबा भावे

मुझे सदा शंकराचार्य का स्मरण होता रहता है । वे परिव्राजक थे। आज से लगभग बारह सौ वर्ष पहले वे समस्त भारतवर्ष में घूमे । उनके अन्दर समस्त भारतीयता मूर्तिमती हो गयी थी । भारत के एक सिरे पर उनका जन्म हुआ और एकदम दूसरे दिसे पर देह छूटी। उन्होंने अपने समय की राष्ट्रभाषा संस्कृति में लिखा और भारत की चार दिशाओं में चार आश्रम स्थापन किये। ऐसे महापुरुषों का प्रभाव केवल उनके शिष्यों तक या जो उनका नाम लेते हैं, उन्हीं तक सीमित नहीं रहता। भगवान् बुद्ध के बाद यदि समाज पर किसी का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा हो, तो वह शंकराचार्य ही हैं।

पंडित नेहरू ने 'भारत एक खोज' ग्रन्थ में शंकराचार्य का वर्णन करते हुए कहा है कि, शंकराचार्य ने सारे भारत के ह्रदय पर अमिट प्रभाव डाला, और वह भी केवल बुद्धिपूर्वक विचार समझाकर, यह बड़े आश्चर्य की बात है! साधारणतया सामाजिक नेता समाज परिवर्तन करने के लिए प्राय: मन को ही अपील करते हैं। परन्तु शंकराचार्य ने मन को नहीं, बुद्धि को अपील की है । बुद्धि को अपील करते हुए भी साधारणतया जैसे अन्य दार्शनिक केवल शाब्दिक चर्चा करते हैं, वैसा उन्होंने नहीं किया। वे गाँव-गाँव घूमे। वर्षों तक लगातार घूमते रहे। गाँव-गाँव लोगों ले पास पहुंचकर विचार समझाते रहे। यानी बुद्धि से बुद्धि को समझाते थे । आज के विज्ञान युग में शंकर की पद्धति ही चलेगी । मतलब पुराने जमाने में शंकर जितने बलवान थे अब उससे भी अधिक बलवान होंगे। क्योंकि उनके ग्रंथों में विचार के सिवा कुछ भी नहीं है । वे विचार समझाते थे और समझ में न आया तो बार-बार समझाते थे । यही वैज्ञानिक पद्धति है।

शंकराचार्य दो बार कुल भारत में घूमे । 32 साल की उम्र तक उन्होंने लगातार काम किया । ग्रन्थ लिखे, चर्चा की, समाज सेवा की और सर्वत्र संचार किया । भारत के एक कोने में, केरल में जन्म हुआ और हिमालय में समाधी ली और अनुभव किया कि अपनी मातृभूमि में ही हूँ । उनके खाने के लिए क्या आधार था ? झोली। कहते थे - 'भिक्षा माँगा कर खाओ, क्षुधा को व्याधि समझो और स्वादिष्ट अन्न की आशा मत रखो। जो सहज में प्राप्त होगा, उसमें संतोष, समाधान मानो।' यही था शंकराचार्य का जीवनाधार। वही उन्होंने अपने शिष्यों को दिया । उसके साथ ज्ञान भी दिया । उनके चार शिष्य थे । चारों दिशाओं में (द्वारिका, जगन्नाथपुरी, बद्रीकेदार और श्रृंगेरी) उनके लिए मठ की स्थापना की। ऐसी थी उनकी विशाल प्रज्ञा! हजार-हजार मील का फासला उन मठों के बीच था। अगर वे एक-दूसरे से मिलना चाहते तो साल-दो-साल पैदल यात्रा करनी पड़ती । लेकिन शंकराचार्य ने उन्हें ज्ञान करा दिया था। इसलिए उनमें हिम्मत आयी थी॥

शंकराचार्य का विचार बारह सौ वर्षों से चला आ रहा है। केवल विचार ही नहीं, बल्कि उनके ग्रंथों का अध्ययन भी आज तक जारी है , यह एक विशेष बात है। मैंने भी उनके ग्रंथों का अध्ययन किया है । नयकी संस्थाओं के एक अखंड परम्परा चली आ रही है । हिन्दुस्तान में आज भी कई स्थानों में शंकराचार्य की गद्दियाँ चल रही हैं। इसी तरह रामानुज, वल्लभ, मध्व, आदि आचार्यों के सम्प्रदायों का हाल है । इसमें कोइ शक नहीं कि आज उनकी हालत गिरी हुई है, लेकिन उस हालत में भी उनके जरिये कुछ-न-कुछ सांस्कृतिक कार्य चल ही रहा है । उनके प्रति लोगों में आज भी श्रद्धा बनी हुई है । काल का उन पर ख़ास असर नहीं हुआ है। आज इन संस्थाओं में तेजस्विता नहीं रही है। फिर भी वे टिकी हुई हैं, तो उसके मूल में कुछ बात जरूर है। **विनोबा साहित्य खंड 6**